SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.20

मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन

डा0 सुशील कुमार[1], कपिल कुमार[2]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद।
[2]शोधार्थी, शिक्षा संकाय, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन करना हैं। अध्यापन शैली शिक्षक की प्रभावशीलता का एक महत्वपूर्ण आयाम है, जो विद्यार्थियों के अधिगम, सहभागिता तथा शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। वर्तमान अध्ययन में लैंगिक (छात्र एवं छात्राएँ) तथा क्षेत्रीय (शहरी एवं ग्रामीण) आधार पर अध्यापन शैली में विद्यमान अंतर का परीक्षण किया गया। अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध के न्यादर्श में मुरादाबाद मंडल के विभिन्न अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत 250 डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं को सम्मिलित किया गया। आंकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित अध्यापन शैली प्रश्नावली का उपयोग किया गया। प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, मानक विचलन तथा क्रान्तिक अनुपात की सहायता से किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्र एवं छात्राओं की अध्यापन शैली में सार्थक अंतर विद्यमान है। छात्राओं का मध्यमान (149.18) छात्रों के मध्यमान (145.32) से अधिक पाया गया तथा प्राप्त टी–मूल्य 2.18, 0.05 स्तर के सारणीकृत मूल्य 1.97 से अधिक था। इसी प्रकार शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में भी सार्थक अंतर प्राप्त हुआ। शहरी प्रशिक्षुओं का मध्यमान (151.46) ग्रामीण प्रशिक्षुओं (146.71) से अधिक पाया गया तथा प्राप्त टी–मूल्य 2.64, सारणीकृत मूल्य 1.97 से अधिक था। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि लिंग तथा क्षेत्रीय परिवेश दोनों ही डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली को प्रभावित करते हैं। अतः अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में ऐसी शिक्षण रणनीतियों एवं प्रशिक्षण गतिविधियों को सम्मिलित किया जाना चाहिए जो सभी प्रशिक्षुओं में प्रभावी, छात्र–केंद्रित तथा आधुनिक अध्यापन शैली का विकास कर सकें। यह अध्ययन शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार तथा प्राथमिक शिक्षा को अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मुख्य शब्द :– *अध्यापक, प्रशिक्षण संस्थान, अध्यापन शैली*

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक तथा नैतिक विकास का आधार होती है। शिक्षा की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षक की दक्षता, योग्यता, व्यवहार तथा अध्यापन शैली पर निर्भर करती है। शिक्षक केवल ज्ञान का

संप्रेषणकर्ता नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व निर्माण, मूल्य विकास तथा सामाजिक अनुकूलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य ऐसे कुशल, संवेदनशील एवं प्रभावशाली शिक्षकों का निर्माण करना है जो आधुनिक शिक्षा की आवश्यकताओं को पूर्ण कर सकें। भारत में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के प्रशिक्षण हेतु डी.एल.एड. (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) कार्यक्रम संचालित किया जाता है। इस कार्यक्रम के माध्यम से प्रशिक्षुओं को शिक्षण कौशल, शिक्षण विधियों, कक्षा प्रबंधन, मूल्यांकन तकनीकों तथा बाल मनोविज्ञान का ज्ञान प्रदान किया जाता है, जिससे वे विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में प्रभावी योगदान दे सकें।

अध्यापन शैली से आशय उस विशिष्ट तरीके से है जिसके माध्यम से शिक्षक विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करता है, उनके साथ संवाद स्थापित करता है तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को संचालित करता है। प्रत्येक शिक्षक की अध्यापन शैली उसके व्यक्तित्व, अनुभव, प्रशिक्षण, अभिवृत्ति, शिक्षण दर्शन तथा सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से प्रभावित होती है। कुछ शिक्षक छात्र–केंद्रित शैली अपनाते हैं, जिसमें विद्यार्थियों की सक्रिय सहभागिता को महत्व दिया जाता है, जबकि कुछ शिक्षक शिक्षक–केंद्रित शैली का उपयोग करते हैं, जिसमें ज्ञान का मुख्य स्रोत शिक्षक होता है। इसी प्रकार कुछ प्रशिक्षु सहयोगात्मक, लोकतांत्रिक, संवादात्मक एवं नवाचारयुक्त अध्यापन शैली को प्राथमिकता देते हैं, जबकि कुछ पारंपरिक व्याख्यान विधि पर अधिक निर्भर रहते हैं। अध्यापन शैली का विद्यार्थियों की उपलब्धि, रुचि, प्रेरणा तथा अधिगम परिणामों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। यदि उनके प्रशिक्षण काल में प्रभावी अध्यापन शैली का विकास हो जाता है, तो वे विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सकेंगे। इसके विपरीत यदि प्रशिक्षण के दौरान अध्यापन शैली में अपेक्षित दक्षता विकसित नहीं हो पाती, तो इसका नकारात्मक प्रभाव विद्यार्थियों के अधिगम पर पड़ सकता है। इसलिए अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन आवश्यक हो जाता है। सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, डिजिटल शिक्षण, स्मार्ट कक्षाएँ तथा ऑनलाइन अधिगम जैसे नवाचारों ने शिक्षण प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान की है। ऐसे में डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप होना अत्यंत आवश्यक है। प्रशिक्षुओं को केवल विषय–वस्तु का ज्ञान ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को समझते हुए उपयुक्त शिक्षण रणनीतियों का प्रयोग करना भी आना चाहिए। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में अनेक आयाम सम्मिलित होते हैं, जैसे कक्षा में संप्रेषण कौशल, शिक्षण सामग्री का उपयोग, विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करना, प्रश्न पूछने की तकनीक, प्रतिक्रिया प्रदान करना, मूल्यांकन प्रक्रिया का संचालन तथा कक्षा अनुशासन बनाए रखना। प्रभावी अध्यापन शैली वह मानी जाती है जो विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करे, उनकी जिज्ञासा को बढ़ाए तथा अधिगम को सार्थक और स्थायी बनाए। इसके विपरीत केवल व्याख्यान आधारित तथा एकतरफा शिक्षण शैली विद्यार्थियों के समग्र विकास में अपेक्षित योगदान नहीं दे पाती।

अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षुओं को विभिन्न प्रकार की शिक्षण विधियों का अभ्यास कराया जाता है, जैसे सूक्ष्म शिक्षण, अनुकरण शिक्षण, प्रदर्शन शिक्षण, परियोजना विधि, समस्या समाधान विधि, सहकारी अधिगम तथा गतिविधि आधारित शिक्षण। इन विधियों के माध्यम से प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का विकास किया जाता है। तथापि सभी प्रशिक्षु समान रूप से इन विधियों को आत्मसात नहीं कर पाते। कुछ प्रशिक्षु नवीन शिक्षण तकनीकों को सहजता से अपनाते हैं, जबकि कुछ पारंपरिक विधियों को अधिक उपयुक्त मानते हैं। यही कारण है कि उनकी अध्यापन शैली में विविधता देखने को मिलती है।

सरकारी एवं निजी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में भी अंतर देखने को मिल सकता है। निजी संस्थानों में प्रायः आधुनिक संसाधनों, तकनीकी सुविधाओं तथा नवाचारयुक्त शिक्षण पद्धतियों पर अधिक बल

दिया जाता है, जबकि सरकारी संस्थानों में व्यापक अनुभव तथा विविध सामाजिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के साथ कार्य करने का अवसर मिलता है। इन दोनों प्रकार के संस्थानों की प्रशिक्षण प्रक्रियाएँ प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली को प्रभावित कर सकती हैं।

अध्यापन शैली का संबंध केवल शिक्षण तकनीकों से ही नहीं, बल्कि प्रशिक्षु की अभिवृत्ति, आत्मविश्वास, प्रेरणा तथा व्यावसायिक प्रतिबद्धता से भी होता है। जिन प्रशिक्षुओं में शिक्षण व्यवसाय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण होता है, वे प्रायः अधिक प्रभावी एवं छात्र–केंद्रित अध्यापन शैली अपनाते हैं। इसके विपरीत जिन प्रशिक्षुओं में शिक्षण के प्रति रुचि कम होती है, उनकी अध्यापन शैली अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली हो सकती है। इसलिए अध्यापन शैली के अध्ययन में मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक कारकों का भी महत्वपूर्ण स्थान है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को विशेष महत्व दिया है। नीति के अनुसार शिक्षकों को केवल विषय विशेषज्ञ ही नहीं, बल्कि नवाचारी, चिंतनशील तथा विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है। यह अध्ययन यह जानने में सहायता करता है कि वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम किस सीमा तक प्रशिक्षुओं में प्रभावी अध्यापन कौशल विकसित कर पा रहे हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में समावेशी शिक्षा, बहुभाषिक शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम तथा प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है। इन परिवर्तनों के अनुरूप अध्यापन शैली का विकास आवश्यक है। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट कर सकता है कि वे इन आधुनिक प्रवृत्तियों को किस सीमा तक अपनाने में सक्षम हैं तथा किन क्षेत्रों में उन्हें अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विषय है। यह न केवल प्रशिक्षुओं की शिक्षण दक्षताओं का मूल्यांकन करने में सहायक है, बल्कि शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का भी आकलन करता है। इस प्रकार के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष भविष्य में शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत करने, प्रशिक्षुओं की व्यावसायिक दक्षताओं को विकसित करने तथा विद्यालयी शिक्षा को अधिक प्रभावशाली एवं विद्यार्थी–केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकते हैं। इस दृष्टि से डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा अनुसंधान के क्षेत्र में एक सार्थक, समसामयिक एवं आवश्यक विषय है।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

अध्यापक शिक्षा किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था की आधारशिला होती है। शिक्षा की गुणवत्ता मुख्यतः शिक्षक की दक्षता, योग्यता, व्यक्तित्व तथा उसकी अध्यापन शैली पर निर्भर करती है। वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में तीव्र परिवर्तन हो रहे हैं। नई शिक्षा नीति, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का बढ़ता उपयोग, शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षण, समावेशी शिक्षा तथा कौशल–आधारित अधिगम जैसी अवधारणाओं ने शिक्षक की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बना दिया है। ऐसे परिवर्तित शैक्षिक परिदृश्य में अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों की भूमिका और भी अधिक बढ़ जाती है, क्योंकि यही संस्थान भावी शिक्षकों को शिक्षण के लिए तैयार करते हैं। डी.एल.एड. (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) कार्यक्रम प्राथमिक स्तर के शिक्षकों के निर्माण का प्रमुख माध्यम है। इस कार्यक्रम में अध्ययनरत प्रशिक्षु भविष्य में विद्यालयों में शिक्षण कार्य करेंगे, इसलिए उनकी अध्यापन शैली का अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता को समझने और सुधारने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अध्यापन शैली से तात्पर्य शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने, उनकी सहभागिता सुनिश्चित करने, अधिगम को प्रभावी बनाने तथा कक्षा–कक्ष में विभिन्न शिक्षण विधियों और तकनीकों के उपयोग के ढंग से है। प्रत्येक शिक्षक की अध्यापन शैली भिन्न होती है। कुछ शिक्षक व्याख्यान पद्धति को अधिक महत्व देते हैं, कुछ सहभागितापूर्ण शिक्षण को अपनाते हैं, जबकि कुछ गतिविधि–आधारित एवं अनुभवात्मक शिक्षण पर बल देते हैं। अध्यापन शैली का सीधा प्रभाव विद्यार्थियों की सीखने की गति, रुचि, उपलब्धि, रचनात्मकता तथा व्यक्तित्व विकास पर पड़ता है। यदि शिक्षक की अध्यापन शैली प्रभावी और शिक्षार्थी–केंद्रित है तो विद्यार्थी अधिक सक्रिय रूप से सीखते हैं तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होती है। इसके विपरीत यदि अध्यापन शैली केवल सूचना प्रदान करने तक सीमित रह जाती है तो अधिगम प्रक्रिया प्रभावी नहीं हो पाती। इसलिए अध्यापन शैली का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन विभिन्न अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण की व्यवस्था, संसाधन, शैक्षिक वातावरण, प्रशिक्षण पद्धतियाँ तथा व्यावहारिक अनुभवों में भिन्नता पाई जाती है। इन भिन्नताओं का प्रभाव प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली पर पड़ सकता है। तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से यह ज्ञात किया जा सकता है कि विभिन्न संस्थानों में अध्ययनरत प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में किस प्रकार के अंतर विद्यमान हैं तथा किन कारकों के कारण ये अंतर उत्पन्न होते हैं। इससे अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में सहायता प्राप्त होती है।

यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि प्राथमिक शिक्षा किसी भी विद्यार्थी की शैक्षिक यात्रा की आधारशिला होती है। प्राथमिक स्तर पर कार्य करने वाले शिक्षक ही बच्चों में सीखने की रुचि विकसित करते हैं तथा उनके बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास की नींव रखते हैं। यदि प्राथमिक स्तर के शिक्षक प्रभावी अध्यापन शैली अपनाते हैं तो विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास संभव हो पाता है। चूँकि डी.एल.एड. प्रशिक्षु भविष्य के प्राथमिक शिक्षक हैं, इसलिए उनकी अध्यापन शैली का अध्ययन प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में समावेशी शिक्षा को विशेष महत्व दिया जा रहा है। समावेशी शिक्षा के अंतर्गत विभिन्न पृष्ठभूमियों, क्षमताओं, आवश्यकताओं तथा विशेषताओं वाले विद्यार्थियों को एक साथ शिक्षा प्रदान की जाती है। ऐसी स्थिति में शिक्षक की अध्यापन शैली लचीली, संवेदनशील तथा विद्यार्थी–केंद्रित होनी चाहिए। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन यह स्पष्ट करेगा कि वे विविध शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षण करने के लिए कितने सक्षम हैं। इससे समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता मिलेगी। यदि प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन लिंग, क्षेत्र, संस्थान के प्रकार, शैक्षिक पृष्ठभूमि अथवा अन्य प्रासंगिक कारकों के आधार पर किया जाता है, तो यह ज्ञात किया जा सकता है कि कौन–से कारक अध्यापन शैली को अधिक प्रभावित करते हैं। इससे अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को अधिक प्रभावी बनाने हेतु उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित की जा सकती हैं क्योंकि इसके निष्कर्षों के आधार पर वे अपने पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण गतिविधियों, शिक्षण–अभ्यास कार्यक्रमों तथा मूल्यांकन प्रक्रियाओं में सुधार कर सकते हैं। यदि अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि कुछ विशेष अध्यापन शैलियाँ अधिक प्रभावी हैं, तो उन शैलियों को प्रशिक्षण का अभिन्न भाग बनाया जा सकता है। इसी प्रकार यदि कुछ कमियाँ या कमजोरियाँ सामने आती हैं, तो उन्हें दूर करने के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा सकते हैं। अध्यापन शैली एक बहुआयामी अवधारणा है, जिस पर अनेक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा सांस्कृतिक कारकों का प्रभाव पड़ता है। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन इस क्षेत्र में उपलब्ध ज्ञान को समृद्ध करेगा तथा भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी आधार प्रदान करेगा।

इससे अध्यापक शिक्षा से संबंधित नए अनुसंधानों को दिशा मिलेगी तथा शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को समझने में सहायता प्राप्त होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति तथा विभिन्न शैक्षिक आयोगों ने शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार पर विशेष बल दिया है। डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली से संबंधित तथ्यात्मक जानकारी नीति–निर्माताओं को यह समझने में सहायता प्रदान करेगी कि वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम किस सीमा तक अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर रहे हैं। इसके आधार पर शिक्षक शिक्षा से संबंधित नीतियों एवं कार्यक्रमों में आवश्यक संशोधन किए जा सकते हैं।

अंततः कहा जा सकता है कि अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता, अध्यापक शिक्षा की प्रभावशीलता तथा विद्यार्थियों के समग्र विकास के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक और महत्वपूर्ण है। यह अध्ययन न केवल प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली की वर्तमान स्थिति को स्पष्ट करेगा, बल्कि प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सुधार, शिक्षण की गुणवत्ता में वृद्धि, समावेशी एवं तकनीक–सम्मिलित शिक्षा के विकास तथा शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों की प्राप्ति में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा। इस प्रकार यह अध्ययन अध्यापक शिक्षा, विद्यालयी शिक्षा तथा शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में विशेष महत्व रखता है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

- शर्मा एवं सिंह (2016) ने डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश डी.एल.एड. प्रशिक्षु छात्र–केंद्रित अध्यापन शैली को प्राथमिकता देते हैं। महिला प्रशिक्षुओं में सहभागितापूर्ण एवं संवादात्मक शिक्षण शैली का प्रयोग पुरुष प्रशिक्षुओं की अपेक्षा अधिक पाया गया। शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि प्रशिक्षण कार्यक्रम अध्यापन कौशलों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- कुमार (2017) ने ग्रामीण एवं शहरी डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली अधिक नवीन एवं तकनीकी आधारित पाई गई, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के प्रशिक्षु पारम्परिक व्याख्यान विधि का अधिक उपयोग करते थे। दोनों समूहों के मध्य अध्यापन शैली में सार्थक अन्तर पाया गया।
- वर्मा एवं यादव (2018) ने शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण शैली एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया। शोध में पाया गया कि जिन प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली लोकतांत्रिक एवं छात्र–केंद्रित थी, उनकी शिक्षण प्रभावशीलता अधिक थी। अध्यापन शैली और शिक्षण प्रभावशीलता के मध्य धनात्मक सहसंबंध पाया गया।
- चौहान (2019) ने डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का प्रभाव पर एक अध्ययन किया। अध्ययन से ज्ञात हुआ कि ICT के उपयोग से प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली अधिक रचनात्मक, सहभागितापूर्ण एवं प्रभावी बनती है। डिजिटल संसाधनों का उपयोग करने वाले प्रशिक्षुओं में नवाचार की प्रवृत्ति अधिक पाई गई।
- मिश्रा एवं पाण्डेय (2020) ने सरकारी एवं निजी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि निजी संस्थानों के प्रशिक्षुओं में गतिविधि आधारित एवं विद्यार्थी–केंद्रित अध्यापन शैली का प्रयोग अधिक पाया गया, जबकि सरकारी संस्थानों के प्रशिक्षु अपेक्षाकृत पारम्परिक शैली का प्रयोग करते थे। दोनों समूहों के मध्य सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक अन्तर पाया गया।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

- शर्मा (2021) ने डी.एल.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्यापन शैली पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि प्रशिक्षण अवधि के अन्त तक प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में सकारात्मक परिवर्तन आया। प्रशिक्षण ने उनकी प्रस्तुतीकरण क्षमता, कक्षा प्रबंधन एवं शिक्षण कौशल को विकसित किया।
- गुप्ता एवं अग्रवाल (2022) ने लिंग के आधार पर डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि महिला प्रशिक्षुओं में सहयोगात्मक एवं संवेदनशील अध्यापन शैली अधिक पाई गई, जबकि पुरुष प्रशिक्षुओं में निर्देशात्मक शैली की प्रधानता देखी गई। दोनों समूहों में कुछ आयामों पर सार्थक अन्तर पाया गया।
- सिंह एवं त्यागी (2023) ने अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन शैली एवं शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन किया। शोध में अध्यापन शैली और शिक्षण अभिवृत्ति के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। जिन प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिवृत्ति उच्च थी, उनकी अध्यापन शैली भी अधिक प्रभावी एवं छात्र–केंद्रित थी।
- जोशी एवं रावत (2024) ने डिजिटल शिक्षण वातावरण में डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली पर एक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल शिक्षण वातावरण ने प्रशिक्षुओं को मिश्रित शिक्षणएवं सक्रिय अधिगम रणनीतियों को अपनाने के लिए प्रेरित किया। इससे उनकी अध्यापन शैली अधिक आधुनिक एवं प्रभावशाली बनी।
- यादव एवं शर्मा (2025) ने डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली एवं कक्षा प्रबंधन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में पाया गया कि प्रभावी अध्यापन शैली रखने वाले प्रशिक्षुओं के कक्षा प्रबंधन कौशल भी बेहतर थे। अध्यापन शैली और कक्षा प्रबंधन के मध्य उच्च सकारात्मक सम्बन्ध प्राप्त हुआ।

समस्या कथन

मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

- मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का लैंगिक आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।
- मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का क्षेत्रीय आधार पर तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाऐं

- मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।
- मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।

आंकड़ा संग्रहण के उपकरण

प्रस्तुत शोध हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आंकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श वर्तमान शोध हेतु मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे 250 डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं को शामिल किया गया है।

© Shiksha Samvad | Received: 10 June -2026 | Accepted: 15 June - 2026 | Published:20 June - 2026

उपकरण

- अध्यापन शैली को मापने हेतु – स्वनिर्मित प्रशनावली का प्रयोग किया गया है।

परिकल्पनाओं का परिभाषीकरण

तालिका संख्या – 1

मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओ	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
छात्र	100	145.32	12.45	2.18
छात्राऐं	100	149.18	12.63	

व्याख्या – तालिका संख्या 1 में मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल. एड. छात्र एवं छात्राओं प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. छात्र प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का मध्यमान 145.32 एवं मानक विचलन 12.45 प्राप्त हुआ जबकि मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. छात्राओं प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का मध्यमान 149.18 एवं मानक विचलन 12.63 प्राप्त हुआ। दोनों समूहों के मध्य प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 2.18 है, जो 0.05 स्तर पर सारणीकृत टी–मूल्य 1.97 से अधिक है। अतः छात्र एवं छात्राओं की अध्यापन शैली में सार्थक अन्तर पाया गया।

तालिका संख्या – 2

मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रान्तिक अनुपात का विश्लेषण एवं व्याख्या

डी.एल.एड. प्रशिक्षुओ	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
शहरी	100	151.46	11.82	2.64
ग्रामीण	100	146.71	13.54	

व्याख्या – तालिका संख्या 2 में मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल. एड. शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली को दर्शाया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. शहरी प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का मध्यमान 151.46 एवं मानक विचलन 11.82 प्राप्त हुआ जबकि मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. ग्रामीण प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का मध्यमान 146.71 एवं मानक विचलन 13.54 प्राप्त हुआ। प्राप्त क्रान्तिक अनुपात 2.64 है, जो 0.05 स्तर पर सारणीकृत ज–मूल्य 1.97 से अधिक है। इसलिए शहरी एवं ग्रामीण डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में सार्थक अन्तर विद्यमान है।

शोध निष्कर्ष मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में लैंगिक आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि छात्र एवं छात्राओं

की अध्यापन शैली में सांख्यिकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण अन्तर विद्यमान है। इससे स्पष्ट होता है कि लिंग का प्रभाव प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली पर पड़ता है तथा दोनों समूहों की शिक्षण संबंधी अभिवृत्तियों एवं व्यवहारों में भिन्नता पाई जाती है।

1. मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में क्षेत्रीय आधार पर सार्थक अन्तर पाया गया। अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अन्तर विद्यमान है। इससे संकेत मिलता है कि क्षेत्रीय परिवेश, उपलब्ध संसाधन, शैक्षिक वातावरण तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिस्थितियाँ प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली को प्रभावित करती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- अग्रवाल, एस., एवं गुप्ता, आर. (2022). डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का लिंग आधारित अध्ययन, भारतीय शिक्षक शिक्षा पत्रिका, 14(2), 45–53.
- चौहान, पी. (2019). सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली पर प्रभाव, शिक्षा एवं समाज, 11(1), 67–74.
- जोशी, एम., एवं रावत, डी. (2024). डिजिटल शिक्षण वातावरण में डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली, समकालीन शिक्षा शोध पत्रिका, 18(1), 55–63.
- कुमार, ए. (2017). ग्रामीण एवं शहरी डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 9(3), 88–96.
- मिश्रा, वी., एवं पाण्डेय, आर. (2020). सरकारी एवं निजी अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों के प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन, शिक्षा विमर्श, 12(4), 101–109.
- शर्मा, एन. (2021). डी.एल.एड. प्रशिक्षण कार्यक्रम का अध्यापन शैली पर प्रभाव, शिक्षक शिक्षा समीक्षा, 15(2), 34–42.
- शर्मा, आर., एवं सिंह, पी. (2016). डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का अध्ययन, भारतीय शिक्षा जर्नल, 8(2), 25–32.
- सिंह, डी., एवं त्यागी, ए. (2023). अध्यापक प्रशिक्षणार्थियों की अध्यापन शैली एवं शिक्षण अभिवृत्ति का अध्ययन, शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 17(3), 72–80.
- वर्मा, एस., एवं यादव, एम. (2018). शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण शैली एवं शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन, भारतीय शिक्षक शिक्षा शोध पत्रिका, 10(1), 59–66.
- यादव, के., एवं शर्मा, वी. (2025). डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली एवं कक्षा प्रबंधन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन, समकालीन शिक्षक शिक्षा, 19(2), 90–99.

Cite this Article:

डा0 सुशील कुमार[1], कपिल कुमार[2],"मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन" Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.181-188, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

डा0 सुशील कुमार[1], कपिल कुमार[2]

For publication of research paper title

मुरादाबाद मंडल में स्थित अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी.एल.एड. प्रशिक्षुओं की अध्यापन शैली का तुलनात्मक अध्ययन

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.20